एक नया धूमकेतु आकाश में है

खगोलविदों ने आकाश में एक नए धूमकेतु के आगमन की घोषणा की है। फिलहाल यह धूमकेतु बृहस्पति ग्रह के निकट एक बारीक बिंदु के रूप में दिख रहा है मगर खगोल विदों का कहना है कि 1 वर्ष के अंदर इसकी चमक बढ़ती जाएगी और यह आकाश में सबसे चमकदार पिंड होगा।

रूस स्थित इंटरनेशनल साइंटिफिक ऑप्टिकल नेटवर्क के विताली नेव्स्की और आर्त्योम नोविचोनोक ने 21 सितंबर को 40 सेंटीमीटर की एक दूरबीन से सी/2012 एस-1 नामक इस धूमकेतु की खोज की थी। जल्दी ही अन्य आकाश दर्शियों ने इसकी पुष्टि की और अंतर्राष्ट्रीय खगोल संघ ने इस खोज को मान्यता दे दी है।

विभिन्न अवलोकनों के मिले-जुले विश्लेषण के आधार पर खगोलविद इस धूमकेतु का रास्ता पता करने में सफल रहे हैं। गणनाएं दर्शाती हैं कि यह धूमकेतु सौर मंडल की लगभग बाहरी सीमा पर स्थित ऊर्ट क्लाउड नामक पट्टी से आया है और इसका परिक्रमा पथ दीर्घवलयाकार है। इसकी दिशा कुछ ऐसी है कि लगता है कि यह सीधे सूर्य की ओर गति कर रहा है। इटली की रेमान्ज़ाको वेधशाला के खगोलविदों का अनुमान है कि यह धूमकेतु सूर्य से मात्र 14 लाख किलोमीटर दूर से गुज़रेगा। यह भी कहा जा रहा है कि यह पहली बार सूर्य के इतने निकट आ रहा है।

ऊर्ट क्लाउड हमारे सौर मंडल की बाहरी सीमा पर बर्फीले पिंडों का क्षेत्र है। यहां से पहले भी एक धूमकेतु आ चुका है। 2009 में हरा धूमकेतु लुलिन यहीं का वासी था।

जब सी/2012 एस-1 सूर्य के पास से गुज़रेगा तो इसका अधिकांश भाग वाष्पीकृत हो जाएगा और वही इसे एक पूंछ प्रदान करेगा। इसलिए धूमकेतुओं को पुच्छल तारा भी कहते हैं। *एस्ट्रॉनॉमी नाऊ* नामक पत्रिका का अनुमान है कि जब यह सूर्य के सबसे नज़दीक होगा तो इसकी चमक पूर्णिमा के चांद से भी ज़्यादा होने की संभावना है।

यह भी बताया गया है कि यह धूमकेतु क्षितिज के निकट ही दिखेगा। इस वर्ष दिसंबर में यह लगभग ध्रुव तारे के बराबर चमकीला होगा मगर 2014 की जनवरी में यह अपनी अधिकतम चमक हासिल कर लेगा। वैसे वरिष्ठ खगोल शास्त्रियों का मत है कि यह एक नया धूमकेतु है और इनके बारे में पक्की भविष्यवाणी करना काफी मुश्किल है। ऐसा पहले भी हो चुका है कि किसी धूमकेतु ने हमारी भविष्यवाणियों को पूरी तरह झुठला दिया था। बहरहाल संभावना यही है कि वर्ष 2014 में हमें एक अद्भुत आकाशीय नज़ारा देखने को मिलेगा। ***(स्रोत फीचर्स)***